अत्राण संसार में धर्म को बना सकते हैं त्राण : आचार्यश्री महाश्रमण

–छतिया स्थित एम.एच.डी. महाविद्यालय में आचार्यश्री ने दी पावन प्रेरणा

09.01.2018 छतिया, जाजपुर (ओड़िशा): ओड़िशा धरा अपनी धवल सेना व अहिंसा यात्रा के साथ जन–जन की चेतना को जागृत कर उनमें सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति जैसे कल्याणकारी संदेशों के फूल खिलाने के लिए निरंतर गतिशील जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम देदीप्यमान महासूर्य, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी मंगलवार को जाजपुर जिले के छतिया गांव में पधारे। यहां स्थित एम.एच.डी. महाविद्यालय प्रांगण में आचार्यश्री का मंगल प्रवचन और पावन प्रवास हुआ। आचार्यश्री महाविद्यालय में उपस्थित विद्यार्थियों, शिक्षकों व श्रद्धालुओं को अपनी पावन प्रेरणा प्रदान की।

अहिंसा यात्रा के माध्यम से भारत के बारहवें राज्य ओड़िशा में गतिमान आचार्यश्री महाश्रमणजी अपने संदेशों से जन–जन को झंकृत कर रहे हैं। आचार्यश्री की अमृतवाणी सुनने वाले लोग प्रभावित होते हैं और आस्थावान लोग आचार्यश्री के समक्ष अपनी बुराइयों का समर्पण कर पावन आशीष भी प्राप्त करते हैं। आचार्यश्री अपनी धवल सेना के साथ राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 16 पर ऐसे गतिमान हैं मानों किसी नदी की धवल धारा इन क्षेत्र के लोगों को मानसिक सिंचन प्रदान करने के लिए प्रवाहित होती चली जा रही हो।

ऐसे महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी चंडीखोल से प्रातः की मंगल बेला में लगभग तेरह किलोमीटर का विहार कर छतिया गांव स्थित एम.एच.डी महाविद्यालय के प्रांगण में पधारे। महाविद्यालय प्रांगण में उपस्थित विद्यार्थियों, शिक्षकों व श्रद्धालुओं को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आदमी अपने जीवन में एक–दूसरे का सहयोग करता है। अपने से बड़ों का आदमी को संरक्षण भी प्राप्त होता है। बड़े देख–रेख भी करते हैं, किन्तु कभी ऐसी भी स्थिति आती है जब आदमी का कोई त्राण कोई शरण देने वाला नहीं हो सकता। आदमी ना किसी का त्राण अथवा शरण बन सकता है और न ही कोई और किसी का त्राण/शरण बन सकता है। आदमी को दूसरों से त्राण और शरण मिलता है, यह तथ्य भी मान्य है तो अत्राण और अशरणता भी पूर्णतया तथ्यपरक है।

आदमी दुनिया में अत्राण है, अशरण है। क्योंकि आदमी को जब मृत्यु घेर लेती है तो कोई भी उसके लिए त्राण या शरण नहीं बन सकता, उस आदमी की मृत्यु निश्चित होती है। बीमारी का ईलाज भी होता है तो कई बार बीमारी भी लाइलाज बन जाती है और फिर मानों वह आदमी को अपने साथ ही ले जाती है। यह आदमी की अनाथता है, अत्राणता और अशरणता है। आदमी को बुढ़ापे से भी कोई नहीं बचा सकता। कोई आदमी वज्र के मकान में छुप जाए, अथवा मौत के सामने कोई काली गाय बन जाए अथवा मौत से कोई तेज दौड़ के भाग जाए, ऐसा संभव नहीं है। मौत हर हाल में आदमी का उठा ही ले जाती है। इस लिए आदमी को धर्म की शरण में जाने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को अपने जीवन में धर्म को लाने का प्रयास करना चाहिए और उसे भी अपना त्राण अथवा शरण बनाने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्यश्री ने मंगल प्रवचन के उपरान्त महाविद्यालय के विद्यार्थियों व शिक्षकों को पावन प्रेरणा प्रदान कर अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्पों को स्वीकार करने का आह्वान किया तो सभी ने आचार्यश्री के श्रीमुख से अहिंसा यात्रा की संकल्पत्रयी स्वीकार की। महाविद्यालय के प्रिन्सिपल श्री प्रदिप्तकुमार दास ने आचार्यश्री के समक्ष अपनी हर्षित भावाभिव्यक्ति दी तथा आचार्यश्री से पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।